बहुत ही सहज है राजयोग...

कभी-कभी आप कम्पयूटर पर काम करते हैं तो उस समय आप अन्दर से कोई फोल्डर या फाईल पर काम करते हैं ना कि अलग से टाईप करते हैं। ठीक उसी प्रकार हमारे संस्कारों में बहुत सारे पुराने फोल्डर्स वा फाईल्स (पुरानी आदतें, यादें, भूतकाल की बातें, दु:ख देने वाली बातें आदि-आदि) पड़े हुए हैं जो बीच-बीच में मन रूपी पर्दे पर आते रहते हैं। इसलिए आप कभी बहुत खुश होते हैं पुरानी बातें याद करके और कभी बहुत दु:खी होते हैं। जैसे कम्पयूटर में कोई फोल्डर को सर्च करने के लिए एक संकेत (क्ल्यू) का इस्तेमाल करते हैं। ठीक वैसे ही जब भी हम किसी भी व्यक्ति को देखते हैं जो बीस साल पहले मिला हो उसी समय उससे सम्बन्धित सभी पुरानी बातें याद आ जाती हैं।

गतांक से आगे...

अब क्या करें?

आज क्या हुआ है कि हमारे मन में हमारा कुछ भी नहीं है। जब आप कहते हो मेरा मन, तो इसका अर्थ हुआ कि आप मन नहीं हैं, अब यदि इसे दूसरे शब्दों में कहा जाए कि जब आप मन नहीं हैं तो आपके मन में रहने वाले लोग भी आपके नहीं हैं। आप कहते भी हैं कि मेरे लोग अर्थात् कि मेरा घर, मेरा परिवार, मेरे बच्चे, मेरा पति, मेरा धन, मेरी सम्पत्ति आदि-आदि। मेरे मन में या यूं कहें कि मेरे संस्कारों में वो चित्र-चरित्र या रंगों के रूप में बैठे हुए हैं। बीच-बीच में यही तो मेरे मन में आ रहे हैं। चूंकि आज बुद्धि काम नहीं कर रही है। इसलिए हमारे मन में जो भी चित्र या चरित्र आ रहे हैं, हम उसको ही सही मानते जा रहे हैं। अब आप बताओ कि यदि यह आपका कम्पयूटर है या आपका मन है तो किसी की हिम्मत है कि बिना आपकी अनुमति के इसे कोई छू भी सके! लेकिन आज सभी छू रहे हैं। इसका अर्थ तो यही हुआ ना कि आज आप मन के गुलाम हैं अर्थात् ``मेरे'' के गुलाम हैं। आज मेरे जो लोग मुझसे कह रहे हैं, मैं वही कर रहा हूँ। जब आप इनसे दु:खी होते तो `मैं' पर आ जाते हैं अर्थात् कहते हैं कि शांति चाहिए, प्रेम चाहिए, आनंद चाहिए आदि-आदि। साधारण शब्दों में कहें तो आप कहते हैं कि यहाँ कोई किसी का नहीं है, सभी स्वार्थी हैं। आपके मन रूपी कम्पयूटर में अलग-अलग लोगों की पेन ड्राइव्स लगी हुई हैं जो कि पूर्णतया वायरस से लिप्त हैं या यूं कहें कि ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, छल-कपट से भरी हुई हैं। जब ये पेन ड्राइव्स आपके मन में लग जाती हैं तो आपके अन्दर भी यह वायरस आना स्वाभाविक है। आपकी भाषा में यदि हम आपको समझायें तो आप क्या कहते हैं कि कृपया सुनिए... मैं करना नहीं चाहती या चाहता लेकिन बेटा या बेटी की वजह से करना पड़ता है या रिश्तेदारी निभानी पड़ती है। तो कितने मजबूर हैं आप कि आपका मन नहीं कर रहा है लेकिन करना पड़ रहा है तो बन्धन हो गया ना। सम्बन्ध नहीं रहा, यदि सम्बन्ध होता ना तो आप कभी भी दु:खी नहीं होते, हमेशा खुश रहते।

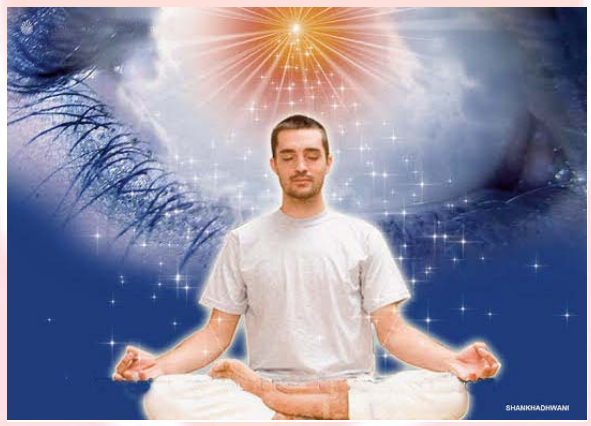

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-14

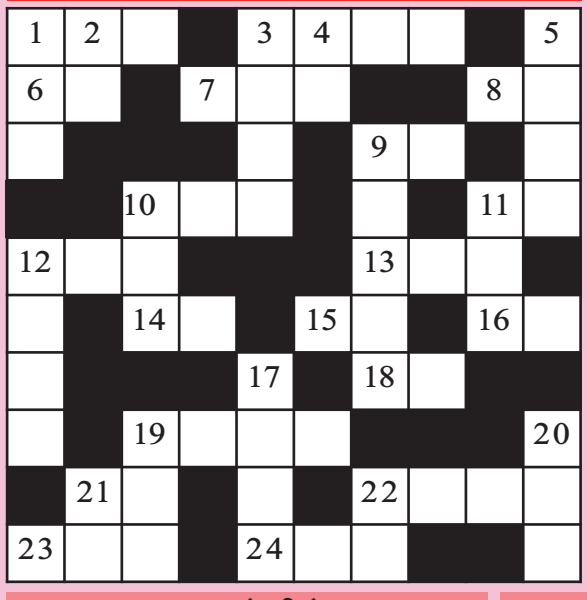

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. अभिमान से मुक्त होने के लिए निरंतर....में स्थित रहो (3)
2. सूरत, शक्ल, स्वभाव (2)
3. वर्तमान काल का, आजकल का, नये जमाने का (4)
4. हाथ, हस्त, ... कार डे दिल यार डे (2)
5. .... की इच्छा नहीं रखनी है, प्रत्यक्ष भेंट (4)
9. सबसे गंदा बनाने वाला.... है, सिनेमा (5)
10. पति, प्रियतम, पिया (3)
11. आँख के ऊपर का पतला आवरण (3)
12. पुरानी दुनिया से दिल लगाना माना....में जाना, नर्क (4)
17. मिलन, मेल-मिलाप (4)
19. सोने की मुद्रा, ठप्पा (3)
20. चमक-दमक, शोभा (3)
21. राज्य, रहस्य, भेद (2)
22. उम्मीद, आसरा, विश्वास (2)

बायें से दायें

1. निरंतर आत्मिक....का अभ्यास ही सेफ्टी का साधन है (3)
3. खींचना, आकर्षित करना (4)
6. नाप, पैमाना, तोल (2)
7. .... रागनी सा तेरा प्यार बाबा, मीठा (3)
8. भीख, याचना (2)
9. वाद्य यन्त्र, ब्रह्मा बाबा के गले में खराबी होने पर बाबा कहते आज....खराब है (2)
10. अर्थ वाला, उद्देश्य वाला (3)
11. पंख, डैना (2)
12. जलयान, जलपोत (3)
13. समस्त, सारा, कुल, सम्पूर्ण (3)
14. नाखून, अंगुलियों का अग्रभाग (2)
15. ....राखे साइयां मार सके न कोय, जिसको (2)
16. ऋण, उधार (2)
18. पैर, कदम, चरण (2)
19. हर बात प्रभू अर्पण कर दो तो आने वाली....सहज अनुभव होगी, समस्यायें (4)
21. पथ, रास्ता, बाट (2)
22. अत्यधिक शानदार, बहुत बड़ा और भव्य (4)
23. आत्मा .... अमर अविनाशी है (3)
24. मनोरंजक दृश्य, हँसी आदि की घटना (3)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन

हैदराबाद-सुराराम। आध्यात्मिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करने के बाद उपस्थित हैं दुंडिगल सी.आई. वेंकटेश्वरालू जी, ब्र.कु. ज्योति व ब्र.कु. सीता।

विमान नगर-महा.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अनीता व पुलिस अधिकारी गण।

चेन्नई। बाढ़ प्रभावित इलाकों के पीड़ित जनों को आवश्यक सामग्री भेंट करते हुए ब्र.कु. देवी व अन्य।

बेसवां-उ.प्र.। मंगलायतन विश्व विद्यालय में 'किसान विकास यात्रा अभियान' के कार्यक्रम में कुलपति डॉ. पावला को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. शशी। साथ हैं ब्र.कु. राज, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. मंजरी, ब्र.कु. सत्यप्रकाश व अन्य।

बांबवडे-कोल्हापुर। बिलासराव हायस्कूल गोगवे में मूल्यों की शिक्षा देने के बाद प्रिन्सीपल लाड सर, पाटील सर एवं साथियों को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. दत्तात्रय,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. क्षमा।

सूरत-अडाजन। बैंक के मैनेजर्स के लिए 'तनाव मुक्ति द्वारा बेहतर ग्राहक सेवा' विषयक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के चीफ रिजनल मैनेजर प्रदीप सैलवेटर, बी.ओ.बी., एस.बी.आई. एवं अन्य बैंक्स के मैनेजर्स एवं ऑफिसर्स, ब्र.कु. दक्षा व ब्र.कु. ऋषि।